पंजीकरण सं. आर.एन. 40596/83 डाक पंजी. संख्या-डी.एल. (एन.)/084/2012-14 प्रकाशितः 1.07.2014 इस अंक का मूल्य 2 रुपये

॥ ओ३म् ॥

युवा उद्घोष

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् (पंजीकृत) का पाक्षिक शंखनाद

Join—http://www.facebook.com/groups/aryayouth/

कार्यालय : आर्य समाज कबीर बस्ती, दिल्ली-*110007*, चलभाष : 9810117464, 9868051444

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्

विशाल कार्यकर्ता बैठक

रविवार, 20 जुलाई 2014

प्रातः 11 बजे

आर्य समाज,पटेल नगर, दिल्ली

सभी साथी समय पर पहुंचे

प्रीति भोजः दोपहर 2 बजे

–अनिल आर्य

वर्ष-30 अंक-27 आषाढ़-2071 दयानन्दाब्द 190 1 जुलाई से 15 जुलाई 2014 (प्रथम अंक) कुल पृष्ठ 4 वार्षिक शुल्क 48 रु.

प्रकाशितः 1.07.2014, E-mail : aryayouthn@gmail.com aryayouthgroup@yahoogroups.com Website : www.aryayuvakparishad.com

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् नई दिल्ली के तत्वावधान में

नोएडा में आठ दिवसीय आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर का भव्य समापन

चरित्रवान आर्य युवा ही देश की दिशा व दशा बदलेंगे -सांसद डा.महेश शर्मा

ऐमिटी नोएडा में सांसद डा.महेश शर्मा को सम्मानित करते श्री आनन्द चौहान व डा.अनिल आर्य, साथ में स्वामी आर्यवेश जी व डा.डी.के.गर्ग। द्वितीय चित्र में जयपुर में सांसद स्वामी सुमेधानन्द जी को सम्मानित करते श्री यशपाल यश व डा.अनिल आर्य,श्री रामकृष्ण शास्त्री।

नोएडा। रविवार, 15 जून 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद्, नई दिल्ली के तत्वावधान में गत् 7 जून से ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूल, सैक्टर-44, नोएडा में चल रहे ''आर्य युवक चरित्र निर्माण व व्यक्तित्व विकास शिविर'' का भव्य समापन हो गया। शिविर में 275 किशोर व युवकों ने प्रातः 4 बजे से रात्री 10 बजे तक अनुशासित दिनचर्या में रहकर नैतिक शिक्षा, योगासन, दण्ड-बैठक, लाठी, तलवार, जूडो-कराटे, बाक्सिंग, स्तूप, डम्बल, लेजियम, सन्ध्या-यज्ञ, भाषणकला, नेतृत्व कला, देश भक्ति की भावना, भारतीय संस्कृति की महानता पर शिक्षकों व विद्वानों से बौद्धिक व श्शारीरिक प्रशिक्षण प्राप्त किये।

मुख्य अतिथि सांसद डा.महेश शर्मा ने कहा कि चरित्रवान आर्य युवा ही देश की दिशा व दिशा बदल सकते हैं। देश के उत्थान व प्रगति में चरित्र निर्माण शिविरों का अपना विशेष महत्व है, इन युवकों ने ही देश को बदलने में व विश्व के अग्रणी देशों में भारत का स्थान बनाने में उल्लेखनीय भूमिका निभानी है। मैंने यहां आकर के बच्चों में देखा कि उनमें देश भक्ति, मानवता के प्रति प्रेम व इस समाज को एक अच्छा समाज बनाने की प्रेरणा काम कर रही है, इसके लिए मैं डा.अनिल आर्य व उनकी पूरी टीम को हार्दिक बधाई देता हूँ। आज राष्ट्र विषम परिस्थितियों से जूझ रहा है ऐसे समय में यह युवक सुयोग्य आदर्श नागरिक बन कर आदर्श समाज की संरचना का कार्य करेंगे। महर्षि दयानन्द की शिक्षाओं पर चल कर ही पूरे विश्व का कल्याण हो सकता है।

समारोह अध्यक्ष श्री आनन्द कुमार चौहान (निदेशक, ऐमिटी शिक्षण संस्थान) ने कहा कि शिविर में प्रशिक्षित युवकों को अब समाज में व्यापत अन्धविश्वास, पाखण्ड व सामाजिक कुरीतियों को मिटा कर एक अच्छे समाज की संरचना का कार्य करना है।

परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा.अनिल आर्य ने कहा कि महर्षि दयानन्द ने जो सामाजिक क्रान्ति का स्वपन देखा था वह इन युवकों को पूरा करना है। परिषद् आर्य समाज के समाजोत्थान व देशोत्थान के कार्य को पूरे देश में रचनात्मक रूप से आगे बढ़ायेगी। इस वर्ष 19 शिविर विभिन्न स्थानों पर चल रहे हैं। आर्य संन्यासी स्वामी आर्य वेश जी ने भी अपना आशीर्वाद प्रदान किया।

समारोह का शुभारम्भ आर्य नेत्री श्रीमती गायत्री मीना ने ओ३म् ध्वज फहराकर किया व आचार्य महेन्द्र भाई ने यज्ञ करवाया। आचार्य भानुप्रकाश श्शास्त्री (बरेली) के मधुर भजन हुए। प्रधान शिक्षक सूर्यदेव व्यायामाचार्य,योगेन्द्र शास्त्री, दुर्गाप्रसाद , प्रणवीर आर्य, सौरभ गुप्ता के निर्देशन में युवको के भव्य व आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन के कार्यक्रम की सभी ने मुक्त कंठ से सराहना की।

ऐमिटी के संस्थापक अध्यक्ष डा.अशोक कुमार चौहान व डा.अमिता चौहान (चेयरपरसन, ऐमिटी इन्टरनेशनल स्कूलस) ने अपनी शुभकामनायें प्रदान की। आर्य नेता श्री दर्शन अग्निहोत्री,श्री राजीव कुमार परम, डा.डी.के.गर्ग, डा.वीरपाल विद्यालंकार, सुनील गर्ग, सत्यवीर चौधरी, सत्यपाल गांधी, विनोद बजाज, विनोद कद, श्यामसिंह यादव, हरिचन्द आर्य, मुकेश सुधीर, राजेन्द्र खारी, विजय आर्य, अमरनाथ गोगिया, आनन्दप्रकाश आर्य, कै.अशोक गुलाटी, प्रवीन आर्य, रविन्द्र मेहता, यशोवीर आर्य, रामकुमार सिंह, एस.सी.ग्रोवर, मायाराम शास्त्री, रवि चड्डा, राजेन्द्र लाम्बा, चतरसिंह नागर, अमीरचन्द रखेजा, हर्ष बवेजा, सुरेन्द्र शास्त्री, लक्ष्मी सिन्हा, देवेन्द्र भगत, आचार्य भानुप्रताप वेदालंकार (इन्दोर), आचार्य श्योवीर शास्त्री (मुम्बई), राजेश्वर मुनि जी आदि प्रमुख रूप से उपस्थित थे। शिविर में सर्वप्रथम शिविरार्थी यश पाराशर, सर्वद्वितीय गौरव कश्यप, सर्वतृतीय मानव आर्य पुरस्कृत किये गये। समारोह में हजारों लोगों ने पधार कर युवा शक्ति का उत्साह वर्धन किया व ऋषि लंगर का आनन्द लेकर नये उत्साह के साथ घरों को लौटे ।

शिविर को सफल बनाने में आचार्य गवेन्द्र शास्त्री,के.एस.यादव,राजेश गोयल,सुरेन्द्र शास्त्री, अनिल हाण्डा,विकास गोगिया, सुरेश आर्य, सरोजनी दता, उर्मिला आर्या, रविदेव गुप्ता, शिशुपाल आर्य, अंकित शास्त्री, प्रमोद चौधरी, निर्मल जावा, डा.ओमप्रकाश मान, प्रवीन तायल, ओम सपरा, पं.रामगोपाल शर्मा, सुरेन्द्र गुप्ता, अरूण आर्य, सुदेश भगत, रामचन्द्र सिंह आदि का विशेष सहयोग रहा।

ऐमिटी नोएडा में सांसद डा. सत्यपाल सिंह व श्रीमती अल्का चौधरी को सम्मानित करते डा.अनिल आर्य,श्री मायाप्रकाश त्यागी व श्रीमती गायत्री मीना । द्वितीय चित्र में श्री आनन्द चौहान को सम्मानित करते डा.अनिल आर्य,श्री महेन्द्र भाई,स्वामी आर्यवेश जी व डा.वीरपाल विद्यालंकार

ईश्वर, वेद, महर्षि दयानन्द और मूर्तिपूजा

-मनमोहन कुमार आर्य

महर्षि दयानन्द सरस्वती आर्य समाज नामक संस्था व संगठन के संस्थापक हैं। उन्होंने 10 अप्रैल सन् 1875 को मुम्बई में प्रथम आर्य समाज की स्थापना की थी। आर्य समाज की स्थापना का उद्देश्य समाज, देश व विश्व से अज्ञान, अन्धविश्वास, कुरीति, अधर्म, अन्याय, शोषण, पक्षपात, ईश्वर की गलत विधि से पूजा व उपासना आदि को दूर करने के लिए की थी। इसके साथ उनका उद्देश्य था कि सारे संसार के सभी मनुष्य सत्य को ग्रहण व असत्य का त्याग करें तथा अविद्या का नाश व विद्या की वृद्धि करें। आर्य समाज के 10 नियम हैं जो संसार की सभी संस्थाओं व संगठनों से उत्कृष्ट व मानव जाति के लिए सर्वाधिक हितकर हैं। इसके बाद भी संसार के लोगों ने यदि आर्य समाज को पूर्ण रूप से नहीं अपनाया है तो इसके पीछे उन मनुष्यों व उनके धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक नेताओं का अज्ञान व स्वार्थ है। आज हम देख रहे हैं कि सारे संसार के सभी मतों व पन्थों में अनेक बाते अज्ञान व अविद्या से पूर्ण हैं जिससे मनुष्यों को भारी हानि हो रही है। यहां तक की आज के उच्च-शिक्षित मनुष्यों को स्वयं अर्थात् आत्मा का भी पूर्ण ज्ञान नही है। ईश्वर का जितना ज्ञान है वह भी आधा-अधूरा व अधिकांश मिथ्या ज्ञान है। ईश्वर कैसा है?ईश्वर वह है जिससे यह सृष्टि व ब्रह्माण्ड अस्तित्व में आता है। उस ईश्वर का स्वरूप सत्य, चित्त व आनन्दयुक्त, सर्वव्यापक, निराकार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, अजन्मा, अमर, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, अजर, अभय, नित्य, पवित्र व सृष्टि को बनाना, चलाना व प्रलय करना है। यह ईश्वर का वास्तविक स्वरूप है, परन्तु यह स्वरूप सभी मत व पन्थों की पुस्तकों में नदारद ही है। ईश्वर कर्मों का फल प्रदाता है। पाप क्षमा नहीं होते। यदि वह क्षमा करता है तो वह न्यायकारी नहीं रहेगा जबकि अनेक मत सस्ती लोकप्रियता के लिए स्वीकार करते हैं कि उनके मता को ग्रहण कर लेने, अर्थात् धर्मान्तरण करने पर, उनके पाप क्षमा कर दिये जाते हैं। हमें लगता है कि इससे बड़ा असत्य या झूठ संसार में और कुछ नहीं हो सकता है। यह ईश्वर पर एक प्रकार से झूठा आरोप है। ऐसी अनेकानेक अज्ञानपरक बातें संसार के सभी मत, पन्थ व सम्प्रदायों में पाईं जातीं हैं। इनसे यदि कोई मुक्त है तो वह केवल एक ही संस्था व संगठन है जिसका नाम ''आर्य समाज'' है। 'आर्य' का अर्थ होता है कि श्रेष्ठ गुण, कर्म व स्वभाव से युक्त मनुष्य। जिस मनुष्य के गुण, कर्म व स्वभाव, आचार व विचार, उसका ईश्वर व आत्मा व प्रकृति का ज्ञान, उपासना आदि श्रेष्ठ व सत्य हैं, वह मनुष्य या व्यक्ति, स्त्री वा पुरूष आर्य संज्ञा का अधिकारी है। अंग्रेजी में ऐसे मनुष्य को हम हमदजसमउंद कह सकते हैं।

महर्षि दयानन्द जब सन् 1863 में अपने गुरू प्रज्ञाचक्षु स्वामी विरजानन्द सरस्वती की आज्ञा से कार्य क्षेत्र में उतरे तो उन्होंने विचार किया कि किस प्रकार से अज्ञान के अन्धकार को दूर किया जाये। उस समय देश गुलामी का जीवन व्यतीत कर रहा था। 5 या 6 वर्ष पहले ही सन् 1857 की क्रान्ति हो चुकी थी जो कि अनेक कारणों से विफल रही। स्वामी दयानन्द ने उस क्रान्ति के विफल होने पर भी विचार किया। उन्होंने पाया कि देश में मूर्तिपूजा, अवतारवाद, फलित ज्योतिष, बाल विवाह, बेमेल विवाह, अशिक्षा, अज्ञान, जातीय एकता व संगठन का अभाव, नाना प्रकार के मत-सम्प्रदाय, नाना प्रकार के धर्म पुस्तक, नाना प्रकार की परस्पर विरोधी धार्मिक व सामाजिक मान्यतायें, राजनैतिक सोच, चिन्तन व संगठन का अभाव आदि गुलामी, दासता व पराधीनता के मुख्य कारण थे। उन्होंने विचार मन्थन में पाया कि मूर्ति पूजा यदि समाप्त हो जाती है तो लोग सच्चे ईश्वर की उपासना में प्रवृत्त होगें जिससे बुद्धि व ज्ञान में वृद्धि होगी और अन्य सभी समस्यायें स्वतः ही समाप्त हो जायेगीं या उनका हल मिल जायेगा।

अतः उन्होंने पुनःपुनः वेदों का आलोड़न किया और वह आश्वस्त हो गये कि चारों वेदों में मूर्ति पूजा का कहीं विधान नहीं है। युक्तियों, तर्क आदि प्रमाणों से भी मूर्तिपूजा को उचित या जायज नहीं ठहराया जा सकता। अतः उन्होंने धर्म की नगर काशी की ओर प्रस्थान किया और काशी के पण्डितों को मूर्तिपूजा को वेद सम्मत सिद्ध करने के लिए ललकारा। इधर महर्षि दयानन्द पण्डितों को ललकार रहे थे और दूसरी ओर सभी पण्डित वेदों के ज्ञान से शून्य थे। उनमें वेदों का अध्ययन करने के लिए आवश्यक आर्ष व्याकरण के साथ योग, उपासना, ध्यान आदि में गति न होने के कारण वह वेदों के तात्पर्य को समझने में पूरी तरह से अक्षम व असमर्थ थे। एक यह भी धर्म संकट था कि यदि वेद की माने तो आजीविका छीन जाती है और मूर्तिपूजा करके उनके वारे-न्यारे हो रहे थे। इससे देश पतन व रसातल में जा चुका था और यदि कुछ बचा था तो वह भी शीघ्र ही समाप्त होने की स्थिति में था।

ऐसी विषम स्थिति में हमारा देश व इसकी धर्म व संस्कृति थी। काशी के राजा ईश्वरी नारायण सिंह काशी के पण्डितों व विद्वानों के पोषक व उनके पालक थे। महर्षि दयानन्द की मूर्तिपूजा को वेद सम्मत सिद्ध करने की ललकार से उनकी गरिमा घट रही थी। ऐसी स्थिति में उन्होंने शीर्षस्थ पण्डितों, स्वामी विशुद्धानन्द आदि को बुलाकर स्वामी दयानन्द को समुचित उत्तर देने को कहा। कहीं न कहीं राजाजी के मन में भी खटका था कि महर्षि दयानन्द का पक्ष सत्य है। अतः सभी येन-केन-प्रकारेण स्वामी दयानन्द का विरोध करने पर उतारू हो गये। मूर्तिपूजा पर काशी में शास्त्रार्थ के दिन 16 नवम्बर, सन् 1969 को शास्त्रार्थ स्थल आनन्द बाग में लगभग 50,000 दर्शकों की भीड़ इकट्ठी हो गई। काशी के इतिहास में सम्भवतः अपने प्रकार का यह पहला ऐतिहासिक शास्त्रार्थ था। एक ओर महर्षि दयानन्द अकेले थे तो दूसरी ओर पण्डितों की फौज थी। शास्त्रार्थ आरम्भ हुआ। काशी के पण्डितों ने स्वामी दयानन्द को उलझाना चाहा परन्तु उसमें भी वह असफल रहे। काशी के पण्डितों के यह घोषित करने पर कि हमें सभी शास्त्र स्मरण हैं, स्वामी दयानन्द ने उन्हें धर्म के स्मृति में दिए गए लक्षण बताने को कहा। इस पर सब पण्डित चुप थे, बाल शास्त्री कुछ विचार कर बताने को उत्सुक लगे तो स्वामीजी ने उसे अधर्म के लक्षण बताने को कहा। वह भी निरूत्तर होने के कारण चुप रहे। घोर आश्चर्य है कि काशी के शीर्षस्थ पण्डितों को न धर्म के लक्षण ज्ञात थे न अधर्म के। उनकी यह प्रतिज्ञा कि उन्हें सभी शास्त्र स्मरण है, के भंग होने से उनकी एक हार तो ही गई। अब मूर्तिपूजा को वेद सम्मत सिद्ध करने का अवसर था। उन पण्डितवर्ग के पास कोई मूर्तिपूजा के समर्थन में वेद का कोई प्रमाण नहीं था और न ही उनमें से किसी ने प्रस्तुत ही किया। इस प्रकार महर्षि दयानन्द ने अपने वेदों के अथाह ज्ञान से काशी के सभी पण्डितों को, उन्हीं के दुर्ग में, मूर्तिपूजा का वेद में विधान न होने पर, मूर्तिपूजा को अनुचित सिद्ध कर दिया। इस प्रकार से उन दिनों देश व विदेशों में प्रचलित सबसे बड़ा अन्धविश्वास ''मूर्तिपूजा'' धराशायी हो गया और आज तक वह धराशायी है। सत्य का समर्थन व असत्य का खण्डन करने वाले महर्षि दयानन्द पर पत्थर व मिट्टी के गोले फेंके गये। उनके प्राण लेने के प्रयत्न भी किये गये परन्तु ईश्वर की कृपा से वह इस दुर्घटना में बाल-बाल बच गये। हम सनातन धर्मी कहलवाने वाली इस हिन्दू जनता को क्या कहें जो उस असिद्ध, वेद-विरूद्ध व युक्ति-तर्क विरूद्ध ईश्वर की मूर्तिपूजा वा उपासना को किये चली जा रही है। इसे हम अपना व देश का दुर्भाग्य मानते हैं। इसी प्रकार से अन्य अन्ध-विश्वास अवतारवाद, फलित ज्योतिष, अशिक्षा आदि भी पल्लवित और पुष्पित हो रहे हैं। शिक्षा में नैतिकता समाप्त होकर नैतिकता, धर्म व सामाजिक मूल्यों का स्थान आधुनिकता व पाश्चात्य की मूल्य-विहीन शिक्षा व कुसंस्कारों ने ले लिया है। मूल वैदिक धर्म व प्राचीन संस्कारों से युक्त संस्कृति पर अस्तित्वहीन होने के खतरे मंडरा रहे हैं। क्या आने वाले समय व युगों में वैदिक धर्म सुरक्षित रह पायेगा, इसका उत्तर देना अत्यन्त कठिन है। यद्यपि स्वामी दयानन्द काशी शास्त्रार्थ वाले दिन विजयी रहे परन्तु वह इसके बाद भी 5 बार काशी गये, मूर्तिपूजा का वेदों से विधान दिखाने के विज्ञापन उन्होंने दिये परन्तु कोई सामने नहीं आया। अतः मूर्तिपूजा वेद विहित न होकर वेद विरूद्ध थी व है।

हम मूर्तिपूजा की असारता पर सत्यार्थ प्रकाश के एकादश समुल्लास में स्वामी दयानन्द द्वारा प्रस्तुत विचार आगे उद्धृत कर रहे हैं जिससे समझदार लोगों को लाभ हो सकता है। स्वामीजी ने प्रश्न किया है कि मूर्तिपूजा कहां से चली। उनका उत्तर है कि जैनियों से चली। प्रश्न किया कि जैनियों ने कहां से चलाई?इसका उत्तर उन्होंने दिया कि अपनी मूर्खता से। पुनः प्रश्न किया कि जैनी लोग कहते हैं कि शान्त ध्यानावस्थित बैठी हुई मूर्ति देख कर अपने जीव का भी शुभ परिणाम वैसा ही होता है। इसका उत्तर वह देते हैं कि जीव चेतन और मूर्ति जड़ है। क्या मूर्ति के सदृश जीव भी जड़ हो जायगा? यह मूर्तिपूजा केवल पाखण्ड मत है जिसे जैनियों ने चलाया है। हम पाठको से निवेदन करते हैं कि वह सत्यार्थ प्रकाश का मूर्तिपूजा का पूरा प्रकरण पढ़कर लाभान्वित हों। इसी समुल्लास में स्वामी दयानन्द ने मूर्तिपूजा के 16 दोष गिनायें हैं। पहला दोष यह है कि साकार मूर्ति में मन स्थिर कभी नहीं हो सकता क्योंकि उस को मन झट ग्रहण करके उसी के एक-एक अवयव में घूमता है और दूसरे में दौड़ जाता है। और निराकार अनन्त परमात्मा के ग्रहण में यावत्सामर्थ्य मन अत्यन्त दौड़ता है तो भी अन्त नहीं पाता। ईश्वर के निरवयव होने से चंचल भी नहीं रहता किन्तु उसी के गुण, कर्म, स्वभाव का विचार करता-करता आनन्द में मग्न होकर स्थिर हो जाता है। और जो साकार में स्थिर होता तो सब जगत् का मन स्थिर हो जाता क्योंकि जगत् में मनुष्य, स्त्री, पुत्र, धन, मित्र आदि साकार में फंसा रहता है परन्तु किसी का मन स्थिर नहीं होता, जब तक कि निराकार ईश्वर में मन को न लगावे। क्योंकि निरवयव ईश्वर के होने से उस में मन स्थिर हो जाता है। इसलिये मूर्तिपूजा करना अधर्म है। दूसरा--उस में क्रोड़ों रूपये मन्दिरों में व्यय करके दरिद्र होते हैं और उस में प्रमाद होता है। तीसरा--स्त्री पुरूषों का मन्दिरों में मेला होने से व्यभिचार, लड़ाई-बखेड़ा और रोगादि उत्पन्न होते हैं। चौथा-- उसी को धर्म, अर्थ, काम और मुक्ति का साधन मानके पुरूषार्थ रहित होकर मनुष्य जन्म व्यर्थ गवांता है। पांचवां--नाना प्रकार की विरूद्ध-स्वरूप नाम चरित्रयुक्त मूर्तियों के पुजारियों का ऐक्यमत नष्ट होके विरूद्धमत में चल कर आपस में फूट बढ़ा के देश का नाश करते हैं। छठा--उसी के भरोसे में शत्रु का पराजय और अपना विजय मान बैठे रहते हैं। उनका पराजय होकर राज्य, स्वातन्त्र्य और धन का सुख उनके शत्रुओं के स्वाधीन होता है और आप पराधीन भटियारे के टट्टू और कुम्हार के गदहे के समान शत्रुओं के वश में होकर अनेकविध दुःख पाते हैं। सातवां--जब कोई किसी को कहे कि हम तेरे बैठने के आसन व नाम पर पत्थर धरें तो जैसे वह उस पर क्रोधित होकर मारता वा गाली प्रदान देता है वैसे ही जो परमेश्वर की उपासना के स्थान हृदय और नाम पर पाषाणादि मूर्तियां धरते हैं, उन दुष्टबुद्धियों का सत्यानाश परमेश्वर क्यों न करें? आठवां--भ्रान्त होकर मन्दिर-मन्दिर देश-देशान्तर में घूमते-घूमते दुःख पाते, धर्म, संसार और परमार्थ का काम नष्ट करते, चोर आदि से पीड़ित होते और ठगों से ठगाते रहते हैं।

नवमां--दुष्ट पुजारियों को धन देते हैं, वे उस धन को वैश्या, परस्त्रीगमन, मद्य, मांसाहार, लड़ाई-बखेड़ों में व्यय करते हैं जिस से दाता का सुख का मूल नष्ट होकर दुःख होता है। दशवां--माता-पिता आदि माननीयों का अपमान कर पाषाणादि मूर्तियों का मान करके कृतघ्न हो जाते हैं। ग्यारहवां--उन मूर्तियों को कोई तोड़ डालता या चोर ले जाता है तब हा-हा करके रोते रहते हैं। बारहवां--पुजारी परस्त्रियों के संग और पूजारिन परपुरूषों के संग से प्रायः दूषित होकर स्त्री-पुरूष के प्रेम के आनन्द को हाथ से खो बैठते हैं। तेरहवां--स्वामी सेवक की आज्ञा का पालन यथावत् न होने से परस्पर विरूद्ध-भाव होकर नष्ट-भ्रष्ट हो जाते हैं। चौदहवां--जड़ का ध्यान करने वाले का आत्मा भी जड़ बुद्धि हो जाता है क्योंकि ध्येय का जड़त्व धर्म अन्तःकरण द्वारा आत्मा में अवश्य आता है। पन्द्रहवां--परमेश्वर ने सुगन्धियुक्त पुष्पादि पदार्थ वायु व जल के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिये बनाये हैं, न कि पुजारी जी द्वारा तोडताड़ के दुर्गन्ध निवारण और आरोग्यता के लिये बनाये हैं। उन को पुजारी जी तोड़ताड़ कर, न जाने उन पुष्पों की सुगन्धि कितने दिन तक आकाश में चढ़ कर वायु जल की शुद्धि करता और पूर्ण सुगन्धि के समय तक उस का सुगन्ध होता है, उस का नाश मध्य में ही कर देते हैं। पुष्पादि कीच के साथ मिल सड़ कर उलटा दुर्गन्ध उत्पन्न करते हैं। सोलहवां--पत्थर पर चढ़े हुए पुष्प, चन्दन और अक्षत आदि सब का जल आकाश में चढ़ता है कि जितना मनुष्य के मल का। और सहस्रों जीव उस में पड़ते व उसी में मरते और सड़ते हैं। ऐसे-ऐसे अनेक दोष मूर्तिपूजा के हैं जो सज्जन लोगों को त्याग देने योग्य हैं। और जिन्होंने पाषाणमय मूर्ति की पूजा की है, करते हैं और करेंगे, वे पूर्वोक्त दोषों से न बचे, न बचते हैं और न बचेंगे। यह प्रकरण सत्यार्थ प्रकाश में आगे भी जारी है परन्तु इसे हम यहीं समाप्त करते हैं। इस लम्बे उदाहरण से हमें मूर्तिपूजा से होने वाली हानियां विदित हो गई है। ज्ञानी व बुद्धिमान लोग इसे जान व समझकर मूर्तिपूजा से बचेंगे तो उनका कल्याण व उन्नति होगी, यह सुनिश्चित है।

(शेष अगले अंक में)

ऐमिटी नोएडा युवक चरित्र निर्माण शिविर की झलकियां

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के होनहार शिक्षक श्री आनन्द चौहान व डा.अनिल आर्य के साथ

आर्य समाज,सैक्टर–33,नोएडा की प्रधान श्रीमती गायत्री मीना व मंत्री कै.अशोक गुलाटी का अभिनन्दन करते स्वामी आर्यवेश जी,डा. अनिल आर्य व श्रीमती प्रवीन आर्या। द्वितीय चित्र में कमांडो प्रदर्शन करते आर्य युवक।

मुम्बई के आचार्य श्योवीर शास्त्री व श्री रवि चड्डा–श्री राजेन्द्र लाम्बा का स्वागत

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् महाराष्ट्र के प्रान्तीय अध्यक्ष आचार्य श्योवीर शास्त्री का स्वागत करते स्वामी आर्यवेश जी,डा.अनिल आर्य, श्री यशोवीर आर्य,श्री रामकुमार सिंह व श्री महेन्द्र भाई जी। पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के प्रधान श्री रवि चड्डा व मंत्री श्री राजेन्द्र लाम्बा का अभिनन्दन करते डा.अनिल आर्य, श्री सुरेन्द्र कोछड़ व श्री अमीरचन्द रखेजा।

आर्य केन्द्रीय सभा गाजियाबाद के प्रधान श्री सुनील गर्ग का स्वागत करते श्री प्रवीन आर्य,डा.अनिल आर्य, श्री सत्यवीर चौधरी। द्वितीय चित्र में दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मण्डल के मंत्री श्री चतरसिंह नागर का स्वागत करते स्वामी आर्यवेश जी,डा.अनिल आर्य साथ में श्री देवदत आर्य, श्री विनोद कद,श्री हरिचन्द आर्य,श्री प्रकाशवीर शास्त्री,श्री रामफल खर्ब।

दिल्ली चलो दिल्ली चलो दिल्ली चलो

मिशन–25

यानि की 12 से 25 वर्ष के युवा लक्ष्यः केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् का राष्ट्रीय अधिवेशन

रविवार, 7 सितम्बर 2014, प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक

योग निकेतन सभागार, वैस्ट पंजाबी बाग, दिल्ली। सभी आर्य युवक तैयारी प्रारम्भ कर दें।

डा.अनिल आर्य, राष्ट्रीय अध्यक्ष महेन्द्र भाई, राष्ट्रीय महामंत्री

स्वामी आर्यवेश जी ''सार्वदेशिक सभा'' के सर्वसम्मति से प्रधान निर्वाचित : स्वामी अग्निवेश जी ने दिया त्याग पत्र

बुधवार, 2 जुलाई 2014, आर्य समाज की शिरोमणि संस्था ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा नई दिल्ली'' की अन्तरंग सभा की बैठक सभा कार्यालय दयानन्द भवन,आसिफ अली रोड़,नई दिल्ली में सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई । स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि मुझे 3 वर्ष के लिये प्रधान चुना गया था, पर मुझे अब 10 वर्ष होने जा रहे है तथा मैं सितम्बर में 75 वर्ष का होने जा रहा हूँ मैं चाहता हूँ कि नये लोग आगे आये तथा सभा के कार्य को आगे बढ़ाये अतः मैं त्याग पत्र देना चाहता हूँ। तत्पश्चात स्वामी आर्य वेश जी का नाम सभा प्रधान के लिये प्रस्तुत हुआ तथा सर्वसम्मति से उन्हें प्रधान चुन लिया गया।

उपरोक्त चित्र में सीकर से सांसद व सार्वदेशिक सभा के पूर्व कार्यकर्ता प्रधान स्वामी सुमेधानन्द जी का अभिनन्दन करते डा. अनिल आर्य,स्वामी आर्य वेश जी, स्वामी अग्निवेश जी व श्री महेन्द्र भाई जी। द्वितीय चित्र में नये सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का स्वागत करते आचार्य प्रेमपाल शास्त्री, डा.अनिल आर्य, श्री आर.एस.तोमर, एडवोकेट, स्वामी अग्निवेश जी, श्री सत्यव्रत सामवेदी व श्री महेन्द्र भाई जी। केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् की ओर से हार्दिक बधाई।

जम्मु कश्मीर की वादियां दयानन्द की जय जयकार से गूंज उठी

युवक चरित्र निर्माण शिविर का आर्य समाज जानीपुर जम्मू में शुभारम्भ

आचार्य विद्याभानु शास्त्री का स्वागत करते डा.अनिल आर्य, श्री सुभाष बब्बर, श्री रामकुमार सिंह, पं.घनश्याम प्रेमी आदि व सामने शिविरार्थी आर्य युवक।

जम्मू। 23 जून 2014, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद जम्मू कश्मीर के तत्वावधान में आर्य समाज जानीपुर कालोनी जम्मू मे 'आर्य युवक चरित्र निर्माण शिविर' का भव्य उदघाटन किया गया। शिविर मे 80 युवक आठ दिन तक योगासन, दण्डबैठक, लाठी, जूडो कराटे, लेजियम, सन्ध्या हवन व भारतीय संस्कृति का प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे।

समारोह के मुख्य अतिथि डा. अनिल आर्य (राष्ट्रीय अध्यक्ष, केनद्रीय आर्य युवक परिषद नई दिल्ली) ने कहा की चरित्रवान, सस्कारवान युवा राष्ट्र की अमूलय घरोहर है। वैदिक विद्वान आचार्य विद्याभानू शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न कर ओ३म ध्वज फहराया उन्होंने कहा कि आर्य सस्कृति व वैदिक विचारधारा जागृत करने का यह प्रयास प्रशंसनीय है। श्री राम कुमार सिंह (प्रदेश संचालक, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद, दिल्ली) , श्री अरूण आर्य (प्रान्तीय उपाध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद), श्री रमेश खजुरीया, श्री कपिल बबर, श्री मुकेश मैन्नी, श्री जगदीश शर्मा, श्री जोगेन्दर शास्त्री, श्री वेदान्शु शास्त्री आदि ने अपने विचार रखे। पं. घनश्याम प्रेमी के मधुर भजन हुए। पं. श्यामाप्रसाद मुखर्जी के 61 वें बलिदान दिवस पर उनको याद करके उनको श्रद्धांजली अर्पित की गई तथा राष्ट्रीय एकता और अखण्डता को मजबूत बनाने का बच्चो को संकल्प दिलवाया गया।

श्री सुभाष बब्बर (प्रान्तीय अध्यक्ष, केन्द्रीय आर्य युवक परिषद जम्मू कश्मीर) ने कुशल मंच संचालन किया। शिक्षक योगेन्द्र शास्त्री, गम्भीर सोंलकी, विमल आर्य प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं।

स्वामी दीक्षानन्द जयन्ती सम्पन्न व वी.वी.आई.पी माल का भूमिपूजन हुआ

रविवार, 15 जून 2014, समर्पण शोध संस्थान के तत्वावधान में स्वामी दीक्षानन्द जी का जन्मोत्सव मनाया गया। चित्र में वैदिक विद्वान डा.गणेशदत शर्मा को सम्मानित करते डा.अनिल आर्य, श्री सत्यवीर चौधरी, श्री राकेश भटनागर, श्री राजेन्द्र भटनागर, श्री रमेश भटनागर, श्रीमती प्रेमलता भटनागर, श्री प्रवीन आर्य व श्री हीराप्रसाद शास्त्री। गाजियाबाद के राजनगर एक्स. में वी.वी.आईपी. माल के भूमि पूजन समारोह में मुख्य अतिथि डा.अनिल आर्य, प्रबन्ध निदेशक श्री प्रवीन त्यागी, श्री मायाप्रकाश त्यागी व श्री रामकुमार सिंह।

पं.रामप्रसाद बिस्मिल जयन्ती सम्पन्न व जयपुर शिविर में आर्य जन

आर्य समाज, सैक्टर–33, नोएडा के तत्वावधान में ऐमिटी सभागार में आयोजित अमर शहीद पं.रामप्रसाद बिस्मिल जन्मोत्सव पर दीप प्रज्जवलित करते डा.अनिल आर्य,डा. जयेन्द्र आचार्य, कै.अशोक गुलाटी व प्रधान गायत्री मीना। द्वितीय चित्र में जयपुर शिविर के उद्घाटन समारोह में उपस्थित आर्य जन।

सम्पादक: **अनिल कुमार आर्य** द्वारा केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के लिए **मंयक प्रिटर्स**,2199/63, नाईवाला, करोलबाग, दिल्ली-5 दूरभाष : 41548503 मो. : 9810580474 से मुद्रित व परिषद् कार्यालय आर्य समाज टी-176-177, कबीर बस्ती, दिल्ली-7 से प्रकाशित, **प्रबन्धक** : दिनेश आर्य, मोबाइल : 9911587765, देवेन्द्र भगत, मोबाइल : 09958889970